धर्म सत्ता युक्त राज सत्ता ही भारत में स्वर्ग की स्थापना करेगा : राजयोगिनी दीदी डॉ निर्मला जी

(रपट : बी.के.गिरीश, ज्ञानसरोवर)

आबू पर्वत, ज्ञान सरोवर, २९जून २०१३। स्वर्णिम युग के निर्माता : राजनेता, नामक विषय पर आज ब्रह्माकुमारीज एवं आर ई आर एफ के राजनेता सेवा प्रभाग के द्वारा एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें देश के करीब ४८० राजनेताओं, सांसदों एवं विधायकों ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्घाटन राजनेता प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी बृज मोहन भाई, ज्ञानसरोवर की निदेशक राजयोगिनी डॉ निर्मला दीदी, ओमशांति रीट्रीट सेंटर की निदेशक राजयोगिनी आशा बहन तथा अन्य महानुभावों ने दीप प्रज्वलित करके किया।

सम्मेलन के प्रारंभ होते ही सबसे पहले उत्तराखंड हादसे में जीवन लीला समाप्त करने वाले प्रभू भक्तों के प्रति कुछ पलों का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजली दी गई। तत्पशाचत कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए ज्ञानसरोवर की निदेशक दीदी निर्मला जी ने कहा कि आज के भारत और पूर्व के भारत में बहुत बड़ा फर्क आ गया है। प्राचीन भारत में जब देवी देवताओं का राज्य था तब धर्म सत्ता एवं राज्य सत्ता दोनो ही एक के हाथ में थीं। तब के देवी देवताओं की हम आज तक भी पूजा अर्चना करते हैं। आज धर्म सत्ता एवं राज्य सत्ता दोनों ही अलग अलग हो गये हैं। जब दोनों सत्ताएं पुनः एक हाथ में आएंगी तब फिर से भारत स्वर्ग बनेगा। इसकी जिम्मेवारी सिर्फ राजनेताओं के हाथ में नहीं है बल्कि सभी को इसके लिए प्रयत्न करने होंगे। सभी को हिंसावृति, लोभवृति एवं स्वार्थ का त्याग करना होगा। मगर प्रश्न है कि इन सभी बुराइयों से छूटने की शक्ति आखिर किस प्रकार से मिलेगी? वह शक्ति मिलेगी आध्यात्मिकता का प्रशिक्षण प्राप्त करने से। स्वयं को आत्मा समझते हुए जब परमात्मा से बुद्धि का योग करेंगे तब शक्तियों का प्रवाह शुरु हो जाएगा। फिर बुराइयों से मुक्त होने में वक्त नहीं लगेगा।

राजनेता प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी बृज मोहन भाई ने कहा कि आप सभी राजनीतिज्ञ ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय तथा परमात्मा शिव बाबा के निमंत्रण पर यहाँ पधारे हैं। जरा विचार कीजिए कि ईश्वरीय निमंत्रण प्राप्त करने का भाग्य कितना होता है? परमात्मा आप सभी को पदमापद्म भाग्यशाली बनाना चाहते हैं। आज धर्मग्लानि का समय आन पहुँचा है। २ वर्ष से लेकर ८० वर्ष तक की महिलाओं के साथ दुराचार हो रहा है। बाप बेटे की और बेटा बाप की हत्या कर रहा है। यह वैसा देश है जहाँ नारियों की पूजा होती थी और आज भी हम सभी मंदिरों में देवियों की पूजा अर्चना तो करते ही हैं। मगर संसार द्वारा अपनी अंतिम अवस्था को प्राप्त हो जाने के कारण यहाँ हर तरह का पापाचार हो रहा है। यह परिवर्तन की वेला है। एक बार फिर से स्वर्णिम युग की स्थापना का कार्य परमात्मा ने प्रारंभ कर दिया है। हम सभी आत्माओं का मनोपरिवर्तन करके परमात्मा हमें स्वर्णिम युग में लेकर चलेंगे। आज के लोग खुद को मूर्ख खल कामी समझते हैं और और स्वयं को फूलों की माला के काबिल नहीं मानते। स्वराज्याधिकारी बन कर हम विश्व का राज्य भाग्य प्राप्त कर सकते हैं। याद रहे कि आत्मा पर गुरुत्वा कर्षण के सिद्धांत लागू नहीं होते । वह नीचे नहीं आती है। स्वरूप में टिक जाने पर वह उपर ही उपर चलती जाती है और देवत्व को पा लेती है।

इलाहाबाद के सपा विधायक सत्यवीर मुन्ना जी ने कहा कि ऐसा लग रहा है जैसे हम सभी किसी स्वर्ग लोग में आ गये हैं। यह हमारा भाग्य है। जो जो आत्माएं यहाँ आई हैं उन्हें अवश्य ही ईश्वरीय आशीष प्राप्त होगा। यहाँ की अलौकिक शांति, अनुशासन एवं प्रेम को शब्दों में बता पाना असंभव है। हम बिलाशक नर्क से स्वर्ग में पहुँचे हैं मगर इस बात का अफसोस है कि फिर से वापस उसी नर्क में जाना होगा। मगर मैं आप सभी को यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि हम वहाँ इस स्वर्ग की छटा को अवश्य ही बिखेरेंगे। यहाँ के कण कण में व्यवस्था पिरोने वाला वह संस्थापक कितना महान होगा?बिना

आध्यात्म के कोई राजनीति कभी सफल नहीं हो पाएगी। हमें नींद से जगा दिया गया है। हमने समझ लिया है कि हम सभी शरीर नहीं आत्माएं हैं।

चंद्रपुर महाराष्ट्र से विधायक सुभाष धोते ने कहा कि यह अद्भुत स्थल है। हमने यहाँ स्वावलंबन एवं अनुशासन सीख है। हमने आत्मा को समझा है। शरीर समझने से ही हम भौतिकवादी बने हैं। आत्मिक ज्ञान से हम श्रेष्ठ बन जाएंगे। अगर स्कूली बच्चों केा भी आत्मा का यह ज्ञान मिले तो संसार स्वर्ग बनेगा। ऐसे कार्यक्रम संपूर्ण राष्ट्र में आयोजित होने चाहिए।

बिहार के पूर्व मंत्री रामचंद्र पूर्वे ने कहा कि यहाँ के कण कण को मेरा नमन। यहाँ हमें सशक्तिकरण का मार्ग प्राप्त होता है। मैं यहाँ तीसरी बार आया हूँ। मैंने इन बहनों से राजयोग सीखा है और अब राजनीति मेरे लिए कोई व्यापार नहीं है बल्कि लोक कल्याण का एक मार्ग है। अब मेरे लिये सत्ता भोग की नहीं बल्कि योग की कुर्सी है। मैंने यहाँ जो आध्यात्मिक अपसर्जन (कनवरजेंस) सीखा है उससे मेरी नैतिकता में वृद्धि हुई है।

असम के पूर्व सांसद एवं ब्रह्माकुमारीज की शिक्षाओं का लाभ प्राप्त कर रहे भाई अरुण कुमार शर्मा ने अपने राजनीतिक भाइयों एवं बहनों के प्रति शुभ भावना एवं कामना का भाव मन में लिये हुए अपने जीवन का अनुभव बताया और कहा कि आज से ७ वर्ष पहले मैं भी आप सभी की तरह यहाँ एक डेलीगेट के रूप में आया था। यहाँ की शिक्षाओं ने मेरे जीवन को आज परिवर्तित कर दिया है। मैं देवत्व प्राप्ति की दिशा में धीरे धीरे बढ़ चला हूँ। आप सभी भी इस शिक्षा को अपनाएं और जीवन को धन्य बना लें।

गुडगॉव से विधि एवं मानवाधिकर प्रभाग की संचालिका बहन पूजा दिवाकर शर्मा ने ब्रह्माकुमारी बहनों के प्रयत्नों की काफी प्रशंसा की और कहा कि मेरे पास शब्दों का अभाव है। मैं इनकी कार्यप्रणाली एवं इनके जीवन से काफी प्रभावित हूँ और अपना जीवन ऐसा बनाने के लिए प्रयत्न करूंगी।

ब्रह्माकुमारी धनेश्वरी बहन ने सभी का राजयोगा का अभ्यास करवाया। ओमशांति रीट्रीट सेंटर की निदेशक राजयोगिनी आशा बहन ने कार्यक्रम का प्रभावशाली संचालन किया। अतिथियों के मानस पर एक अमिट छाप छोड़ता हुआ यह कार्यक्रम संपन्न हुआ।